IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डॉ० जयभगवान शर्मा के पद्य साहित्य का परिचयात्मक विवेचन

डॉ0 रेनू शर्मा

डॉ० जयभगवान शर्मा के साहित्य का परिचयात्मक विश्लेषण में पद्य साहित्य पर प्रकाश डाला गया है। डॉ० जयभगवान शर्मा समकालीन साहित्य संसार के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं।इनकी विविधगामी कृतिया इनके व्यक्तित्व का प्रमाण हैं। यही कारण है कि देखते ही देखते इन्होंने राष्ट्रीय साहित्यिक परिदृश्य पर अपनी पुष्ट पहचान बना ली है। आज एक विशिष्ट कवि हाइकुकार निबंधकार, शोधक समीक्षक, संपादक के रूप में साहित्य के सभी क्षेत्रों में डॉ० शर्मा के योगदान की चर्चा यत्र–तत्र सर्वत्र सुनी जा सकती है। डॉ० जयभगवान शर्मा मानवीय संवेदना के धरातल पर विश्वास रखने वाले कवि हैं। जो बड़ी शिद्दत के साथ आम आदमी से जुड़े हुए हैं। डॉ० शर्मा वैचारिक प्रतिबद्धता के कवि है। इनके काव्य में सहज, पैनापन तथा विषय की विराटता का दर्शन असीम सागर की तरह फैला हुआ है। उनकी रचनाए जीवन के इर्द–गिर्द पांव पसारती विसंगतियों को उघाड़ती हैं और एक नए मार्ग का निर्माण करती है। डॉ० शर्मा का कार्य संगत जीवन मूल्यों को स्वर देता है। उनका काव्य सामाजिक सुधार का एक प्रबल माध्यम और औजार है। कविताएं सामाजिक व्यवस्था चरमरान से रोकने और मानव को अज्ञानता की अंधेरी गुफा में जाने का मार्ग अवरुद्ध करती हैं। काव्य सृजन में इनका उच्च स्थान है।

कवि डॉ० जयभगवान शर्मा की लगभग चार दशक की काव्य–यात्रा में कविताए हाइकु, गजल, दोहा आदि काव्य विधाओं में इनका वैविध्यपूर्ण कृतित्व दर्शनीय है। डॉ० शर्मा का प्रथम काव्य संग्रह 'स्पंदन सन 2010 में प्रकाशित हुआ था। तत्पश्चात इनकी क्षितिज के पार वक्त के पंख, पथ के राही झरता पानी हाइकु संग्रह 'स्लोगन वल्लरी' स्लोगन, प्रतिदान तथा गवाक्ष कविता संग्रह आदि अनेक महत्वपूर्ण काव्य कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। डॉ० शर्मा ने अपने काव्य संग्रह में विसंगतियों और विषमताओं को उद्घाटित करने का साहसिक प्रयास किया है। आधुनिक युग की घुटन तनाव और संत्रास से जूझती मानव मन की पीड़ा को पूरी निष्ठाए नैतिकता, सामाजिकता और धार्मिकता के साथ पूरी ईमानदारी से जीवंत किया है। वस्तुतः युग चेतना की अभिव्यक्ति ने. डॉ० शर्मा की कविताओं को अधिकाधिक समसामयिक और प्रामाणिक बनाने में सहयोग किया है।

स्पंदन

डॉ० जयभगवान शर्मा की प्रारंभिक दौर की कुल ३० कविताओं के इस संग्रह का प्रकाशन सन 2010 में, अनिल प्रकाशन, दिल्ली से हुआ। संग्रह की सभो कविताएं एक अंतर्मुखी कवि के अंतर्मन की कविताएं हैं। इसलिए एक भावुक संवेदनशील और प्रेमातुर हृदय के समस्त उत्शृंखल, उद्वेलन रूप आकर्षण और अंतर पीड़ा को इस संग्रह की कविताओं में अभिव्यक्त होते देखा जा सकता है। यह संग्रह कवि की भावनाओं का संग्रह है जिसमे किसी मोड़ पर प्रेम है, कहीं पलायन का भाव है तो कही नश्वर संसार के प्रति विरक्ति की भावना संग्रह से गुजरते हुए हिंदी कविता की स्वच्छवादी भावभूमि अनायास स्मरण हो जाती है। डॉ० शर्मा के सौंदर्य प्रेमी स्वरूप का निरूपण भी इस काव्य संग्रह में देखा जा सकता है। इनकी कविताओं में सौंदर्य, दैहिक आकर्षण, अलौकिक प्रेम और असफलता दलित निराशा, वेदना के मार्मिक चित्र भी अंकित हुए हैं। कविता के इतिहास में डॉ० शर्मा का महत्व एवं प्रतिष्ठा इस दृष्टिकोण से है कि उन्होंने कविता को नया मुहावरा दिया है। कड़े

संघर्ष से कविता को नया कथ्य तथा रूप गढ़ा है। आम व्यक्ति की व्यथा और इच्छाओं की स्पष्ट अभिव्यक्ति में अनुभवगत ताप का खारापन उन्हें एक कवि के रूप में खड़ा करता है। आधुनिक भाव बोध के सभी स्तरों को खोलने का प्रयास उनकी कविताओं में लगातार हुआ है। उनकी काव्य यात्रा विकास की उन्हीं शक्तियों का प्रमाण है। अपने समय की त्रासदी को नए प्रतीकों और बियों में रचने वाली कला भारतीय काव्य जगत में उनके अनुभवों की शक्ति का सबूत है ।

स्वयं कविवर डॉ० जयभगवान शर्मा अपने स्वकथन 'अन्तः स्पंदन' में लिखते हैं, "प्रस्तुत काव्य संग्रह भारतीय दर्शन, सामाजिक परिवेश, प्राकृतिक दृश्य, स्वयं की अनुभूति एवं यथार्थ विषयों पर आधृत हैं। इसमें जहा प्रेममय असीम आनंद की अनुभूति एवं उसके सूक्ष्म स्वरूप का चित्रण है, वहीं जीवन के कटु सत्य एवं यथार्थ से साक्षात्कार है। एक ओर विरह की विदारक वेदना है तो दूसरी ओर अंर्तद्वंद्व के भंवर में भ्रमित मानव के लिए आत्मा और परमात्मा के तादात्म्यपरक संबंध का संदेश है। जहां तथाकथित मित्रों की छल कपटता तथा निकृष्ट मानसिकता पर प्रहार करते हुए मनुष्य को उनसे सचेत रहने की चेतावनी दी गई है वहीं व्यक्तिगत प्रलोभन बुलाकर मानव को समष्टि हितार्थ कर्म करने के लिए परामर्श भी हैं जहा लोगों की तुच्छ मानसिकता तथा हनन होते मानवाधिकारों के विभत्स परिवेश का चित्रण है वहीं प्राकृतिक दृश्य दीर्घा के नयनाभिराम दृश्यों का अवलोकन भी है। इस प्रकार संपूर्ण काव्य संग्रह में जीवन के अनुभव स्पंदित होते नजर आएंगे। यह अनुभव व्यक्तिगत अथवा एकाकी के ही है ऐसा नहीं कहा जा सकता क्योंकि सभी प्रकार के अनुभव प्राय मानव जीवन में घटित होते रहते हैं।"[1]

कविवर को दर्शन और वेदांत का ज्ञान है दार्शनिक अध्ययन वर्तमान युग की विकृतियों और विसंगतियों के टकराव से उत्पन्न संवेदनाओं के समारोह स संयुक्त होकर नवजागरण का शंखनाद करने वाली राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना में ढला हुआ है। कविता में रचनाकार डॉ० जयभगवान शर्मा का यही वेदांत दर्शन प्रेरित पावन सांस्कृतिक संदेश रूप में मुखर हुआ है–

"प्रेम दीप जलाओ

रनर में।

श्रम–यान दौडाओ

डगर डगर मे

ऊंच–नीच का

भेद भुला कर धर्म भ्रम के

आवरण को हटाकर

निज हित की

लालसा तज कर

व्यक्तिगत

प्रलोभन भुला कर करो बद्ध मानव मानव को

समष्टि सूत्र में।"

प्रेमानुभूति को अभिव्यक्त करने हेतु कवि मुरझाए पुष्प लेकर खड़ा है जिन्हें अपने मीत की पावन झोली में डालना चाहता है और अपने मौत से करुण कथा का वर्णन करने के लिए विनती करता

है बिंबो और प्रतीकों का निर्माण करता है तथा अंत में सोचता है यह स्वप्न था सच कविता अनूठा स्वप्न से उद्धृत पंक्तिया–

"बंधु !

विशीर्ण अरमानों के

मुरझाए पुष्प

अंजलि में लिए

खड़ा हू

नाराज न हो

तो डाल दू

आपकी

पावन झोली में

हो जाए जी हल्का

पर

पर डरता हू

किसको समय है

सुनने को

किसी की

करुण कथाए"

डॉ० शर्मा ने जहां परिवेश में व्याप्त विसंगति, विषमता, विडम्बना, तनाव और अकेलेपन के बोध को अभिव्यक्त किया है, वहा अपने प्रिय के सौंदर्य की कोमल अभिव्यक्ति भी दी है। कवि ने सौंदर्य को जीवन से जोड़ कर देखा है। कवि की कल्पना में दार्शनिकता की झलक है। कविता एक संदेश मित्र के नाम से बानगी देखिए–

"ये

क्या समझे

उन मासूम

तडफते दिलों के

जार जार क्रंदन को

काव्य संग्रह स्पंदन में उत्पन्न प्रेम भावनाए नारी सौंदर्य, आडबर का विरोध, विषमताओं का खुलासा तथा नैसर्गिक प्रकृति चित्रण और सामाजिक एवं युगीन यथार्थ बोध का प्रखर रूप मुखरित हुआ है।

भाषा की सरलता, स्वाभाविकता, भावों की सहजता, संप्रेषणीयता और बोधगम्यता प्रभावी है। मुक्त छद में रचित काव्य की सरलता से अपनापन का बोध करने वाला संग्रह है।

क्षितिज के पार

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ0 जयभगवान शर्मा द्वारा रचित 'क्षितिज के पार' हाइकु संग्रह काव्य विधा का एक अनूठा प्रयोग है। जापानी भाषा शैली में लिखी जाने वाली काव्य विधा हाइकु द्वारा डॉ० शर्मा ने हिंदी काव्य की धारा में श्रीवृद्धि की है। प्रस्तुत हाइकु संग्रह सन् 2010 में अनिल प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। संग्रह में कुल 400 हाइकु को संग्रहित किया गया है। हाइकु काव्य में कवि को मात्र 17 अक्षरों और 3 पंक्तियों में अपनी भावनाओं को श्रेष्ठ ढंग से व्यक्त करना होता है। हाइकु को मात्र लघु न मानकर संपूर्ण काव्य दृष्टि का प्रतीक माना जा सकता है। डॉ० शर्मा का यह प्रथम हाइकु संग्रह है, उनके मतानुसार, "हाइकू छंद सत्रहाक्षरी है जिसमें तीन पंक्तियों में 5–7–5 अक्षरों का क्रम होता है तथा यह बिम्ब विधान, मार्मिकता, चित्रात्मकता आदि काव्य गुणों से युक्त होता है। प्रत्येक हाइक, एक मुक्तक होता है और एक पृथक संदेश का संवाहक भी।

प्रस्तुत हाइकु संग्रह में जहां वर्तमान के अशांत मानव मन को सांत्वना प्रदान करने तथा यथार्थ के दर्शन कराने का प्रयास किया गया है वहीं जगत के चरम सत्य आध्यात्मिकता के विविध रूपों को अनावृत भी किया गया है। इसके अतिरिक्त हाइकु छंदो के माध्यम से भौतिकवाद, सामाजिक विषमता, धर्म, मनोविज्ञान व रहस्यवाद का दिग्दर्शन कराने का दुस्साहस भी कवि ने किया है।

संग्रह के आमुख में डॉ० रामनिवास मानव ने लिखा है, "क्षितिज के पार' में डॉ० शर्मा के 400 हाइकु संग्रहित हैं जिनमें प्रकृति–चित्रण के साथ जीवनबोध एवं युगबोध को भी अभिव्यक्ति मिली है।"

चारों तरफ फली विसंगतियों एवं विषमताओं से पूरा समाज पीड़ित है तथा उसी पीडा, संत्रास, घुटन को डॉ० शर्मा ने अपने हाइकुओं के माध्यम से व्यक्त किया है। डॉ० शर्मा की पीड़ा कुछ इस तरह से मुखर होती है–

"स्थिति विकट

रंग बदलते वो,

ज्यों गिरगिट ।"

रहा न भाव

झुलसी मानवता

घाव ही

घाव।"

हाइकु में प्रकृति और दर्शन का होना अनिवार्य है। डॉ० शर्मा द्वारा रचित प्रकृति संबंधित हाइक,ओ भी बड़े प्राणवान तथा प्रभावशाली षैली की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं–

"छिटके मोती

निशा के आंसू मानो

मौर पिरोती।"

काली घटाएं

करे स्पदित मुझे

क्यों ललचाएं।"

अत हाइकु में युगबोध संपृक्त होने के साथ ही तुकांत व लयात्मक भी होना आवश्यक है। डॉ० शर्मा के हाइकु इसका प्रमाण है–

"जीव का डिम्ब

पंचमहाभूतों का

है प्रतिबिम्ब।"

दया का दान

मानव जीवन का

है परिधान।"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि क्षितिज के पार डॉ० शर्मा कृत हाइकु संग्रह, हाइकु के क्षेत्र में मजबूती के साथ पदार्पण करता है।

वक्त के पंख

'वक्त के पंख' हाइकु संग्रह कवि ने ममता की अनुपम मूर्ति, वात्सल्यमयी परम् पूज्या अपनी माता जी को समर्पित कर उसकी वंदना में लिखा है–

वंदना धाम

शत शत बार माँ.

तुझे प्रणाम।

प्रथम हाइकु संग्रह 'क्षितिज के पार' के पश्चात यह द्वितीय संग्रह है जिसमे जीवन जगत से जुड़े 450 हाइकु संग्रहीत है। यह संग्रह अनिल प्रकाशन, दिल्ली से सन 2012 में प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत संग्रह में भी प्रथम हाइकु संग्रह की भांति जीवन दर्शन, ऋतु, संकेत, सामाजिक सरोकार अध्यात्म, भौतिकवाद, जीवन मूल्य, मानवीय सम्वेदनाएं बिम्ब तथा शब्द चित्र आदि से सम्बंधित विषयों का आलोक गुम्फित है। कला पक्ष के साथ–साथ भाव पक्ष को सम्पुष्ट करना रचना का अन्यतम पहलू है।

" डॉ० जयभगवान शर्मा के कुछ हाइकु यहा प्रस्तुत हैं, जिनमें प्रकृति के विविध रूप देखे जा सकते हैं–

"हो गई भोर

पंछियों के शोर से

महके छोर।"

चांद बुलाए

मेघ कुंजों से झांक

मुझे लुभाए।"

युगीन सत्य और समकालीन भावबोध की अभिव्यक्ति डॉ० शर्मा के हाइकुओं में है।

"उजले वस्त्र

जनतंत्र के लिए

बने नश्तर।"

आज राष्ट्रीय कर्तव्यपरायणता, संवेदनशीलता और समरसता जैसे जीवन मूल्य जैसे कि नष्ट हो चुके हैं। सत्ता पुलिस और दलाल का गठजोड सरेआम लूट खसोट में लिप्त है। मनुष्य न रहा, कवि लिखता है–

"हम हैं कौन– अजनबी चेहरे

सब है मौन।"

डॉ० शर्मा धार्मिक प्रवृत्ति के अध्यात्म और दर्शन से जुड़े व्यक्ति हैं। इसी का सुफल है कि उनके अधिकाश हाइकुओं में अध्यात्म तत्त्व दर्शन की अभिव्यक्ति दिखाई देती है–

"भ्रम जो छटा

पूर्वाभास कराए

भव में घटा।"

देह व्यक्तित्व

पटका तन्तु बिन

नहीं अस्तित्व।"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'वक्त के पंख' संग्रह के सभी के सभी हाइकु उम्दा है जो जाने पहचानें जीवन संदर्भों से जुड़े हैं। भाषा सरल सहज तथा बोधगम्य और लयबद्ध है।

स्लोगन वल्लरी

पर्यावरण के प्रति सचेतन व संवेदनशील सहृदय मानवों को समर्पित डॉ० जयभगवान शर्मा कृत 'स्लोगन वल्लरी' सन 2016 में अनिल प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित है। पर्यावरण और जीव जगत का तदात्म्यपर्क संबंध होता है। आज भौतिक व जैविक प्रदूषण बढ़ रहा है। परिणामतः प्राकृतिक असंतुलन का खतरा बढ़ गया है। मनुष्य जीवन मनुष्यों को आत्मसात नहीं कर पा रहा है तथा

स्वार्थ के वशीभूत होकर अनैतिक कार्यों में निमज्जित होता जा रहा है, यथा भ्रूण–हत्या करना करवाना प्रदूषण फेलाना आदि–आदि। वस्तुतः जीवन को सुखद एवं स्वस्थ बनाने के लिए स्वच्छता अपनाने वृक्षारोपण करने, ऊर्जा, जल व पर्यावरण संरक्षित करने की महती आवश्यकता ही नहीं अपितु अपरिहार्यता भी अपेक्षित है ताकि जड़ प्रकृति चेतन हो उठे।

प्रथम खण्ड में स्वच्छता, वृक्षारोपण, दहेज जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, जनसंख्या वृद्धि, नेत्रदान, साक्षरता, ध्वनि प्रदूषण, रक्तदान, पॉलिथीन वायु प्रदूषण, विकलांगता भ्रूण हत्या, ऊर्जा संरक्षण, शिक्षा का अधिकार, पोलियो उन्मूलन, पटाखे, ड्रिप सिंचाई पद्धति, बिजली संरक्षण, बिजली चोरी तथा नूकल आदि है और दूसरे खंड 'समाघोष–वल्लरी' में इन्ही विषयों को संस्कृत भाषा में भी रचा गया है।

उक्त विभिन्न विषयों के माध्यम से डॉ0 जयभगवान शर्मा ने स्लोगनों की रचना कर समाज व राष्ट्र को अनेकाधिक संदेश दिए हैं। अतः समाज व राष्ट्र के प्रति अपनी गहन। सचेतना व सच्ची आस्था का परिचय दिया है। यथा–

कतिपय हिंदी–संस्कृत नार–

हिंदी रू

स्वच्छता का स्पंदन,

व्याधियों का क्रंदन।"

संस्कृतः

स्वच्छकेषु सुधा वासम्,

स्वच्छी कुरु विश्वम् ।"

हिंदी रू

स्वच्छता जीवन का मूल,

इसे न जाना कभी भूल।"

संस्कृतः

स्वच्छता जीवनस्य मूलम्,

सदा स्वच्छम् भवितव्यम् गृहम्।"

वृक्षारोपण के स्लोगनों की बानगी देखिए–

हिंदीः

वृक्षारोपण खुशहाली का वरदान,

जीवन की सब आपदाओं का निदान ।[8]

संस्कृतः

वृक्षारोपनम् प्रकृत्यारू वरदानम्,

जीवनस्य आपदाम् निदानम्।"

हिंदी रू

पेड़ों बिन जीवन निस्सार,

सदा करो इनका सरकार।"

संस्कृत रू

पड़पविहीनम जीवनम् निस्सारम,

सदैव कुरु एतेषाम् सम्मानम।"

वर्तमान समय में विश्व की समस्त मनुष्य जाति की देवी संपदा का सतत् हास हो रहा है। मानवीय संवेदनाएं स्पदनहीन हो रही हैं तथा मनुष्य जाति न्यूनाधिक मात्रा में कुरीतियों तथा दुर्व्यसनों के प्रभावपाश में आबद्ध है। ऐसे में कवि समस्याओं के कारणों एवं दुष्परिणामों का सूक्ष्म विश्लेषण कर समस्याओं से निजात पाने के समाधान सुझाता है। जिसके कारण मनुष्य अपनी सर्वश्रेष्ठ अवस्था को प्राप्त कर सकें।

पथ के राही

हाइकु भावानुभूति के चरम क्षण की कविता है। यह क्षण हाइकुकार की चेतना मे जीवन दर्शन से अनुप्राणित होकर झकृत होता रहता है और इसकी परिणति होती है, एक सफल और समर्थ हाइकु संग्रह 'पथ के राही' के रूप में। 'पथ के राही' हाइकु संग्रह सन 2017 में साहित्य मंदिर, दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। 'पथ के राही' शीर्षक से प्रकाशित यह अद्यतन सुदूर हाइकु संग्रह है इससे पूर्व डॉ० शर्मा के हाइकु संग्रह "क्षितिज के पार, 'वक्त के पख' तथा 'साम्मण झूले'। (हरियाणवी भाषा में रचित प्रथम हाइकु संग्रह) प्रकाशित हो चुके हैं जिन्हें पाठकों का भरपूर समर्थन मिला है। निःसंदेह पाठकों की प्रेरणा से ही डॉ० शर्मा उत्तरोत्तर हाइकु लेखन में प्रवृत्त हो पाया है।

पथ के राही संग्रह के भाव व कला शिल्प की बात करें तो सभी हाइकु तुकांत है तथा उनमें लयात्मकता है–

"चांद निहारे

बादलों की ओट से

करे इशारे।"

फूल पलास

लहर लहर जो

करें विलास।"

संग्रह के हाइकु पूर्णतया भारतीय परिवेश में ढले युगबोध से ससक्त है। कतिपय हाइकु लुप्त होती लोक संस्कृति से अवगत कराने का सुगम संज्ञान लेते हैं–

"होली के रंग

अच्छे हों या हो बुरे,

मन के संग।"

संग्रह में प्रकृति चित्रण, ऋतु संकेत, सामाजिक व्यवस्था एवं उस में विद्यमान विद्रूपताओं, सत्रासों व भ्रष्टाचार के मुद्दे विशेषतया सम्मिलित किए गए है–

"बादल काले

झर झर झरते.

पर्वत नाले।"

प्रकृत संग्रह में नारी विषयक बहुत सारे हाइकु रचे गए हैं यथा बेटी सबला नारी, त्याग की मूर्ति तथा शृंगार आदि के हाइकु है–

"नारी है एक

जन्म से मृत्यु तक

रूप अनेक।"

वस्तुत डॉ० शर्मा ने हाइकु विधा की जड़ों को सिंचित किया है। जिसमें सामाजिक सरोकार, अध्यात्मवाद, भौतिकवाद, सामाजिक विकृतियां जीवन मूल्य, मानवीय संवेदनाएं आदि से सम्बंधित विषयों का आलोक दीपशिखा की भांति गुम्फित है।

झरता पानी

झरता पानी हाइकु माला डॉ0 जयभगवान षर्मा रचित क्षितिज के पार, वक्त के पंख, साम्मण झूले तथा पथ के राही के बाद पांचवा संग्रह हैं प्रकुत हाइकु संग्रह सन् 2018 में अनिल प्रकाषक, दिल्ली से प्रकाषित है। जिसमें 175 हाइकुओं को संकलित किया गया है। यह संग्रह भी अन्य हाइकु संग्रहों की भांति अध्यात्मक, भौतिकवाद, सामाजिक विकृतियों, मानवीय संवेदनाओं जीवन दर्शन प्रकृति वर्णन, ऋतु संकेत एवं सामाजिक सरोकारों से संबंधित विषयों पर लेखन का आधार बनाकर लिखा गया है तथा काव्य की लयात्मकता का विशेष ध्यान भी रखा गया है। हाइकुओं में जीवन बोध तथा मानवीय मूल्यों के संवर्धन के प्रसंगों में उत्प्रेरक तत्व विद्यमान है जो हमारे समाज के अंग प्रत्यंग है।

प्रकृति संकेत के कतिपय हाइकु दृष्टव्य हैं–

"नभ रुआसा

घटाए घनघोर

चातक प्यासा।"

, , ,

हिलोर लेती

विलोल जलोर्मियाँ

झाकते तट।"

अत डॉ० जयभगवान शर्मा ने ध्वनि की सर्वोच्चता के पक्ष में काव्य की पारम्परिक मान्यताओं के सामने होते हुए हाइकु के शब्द तथा अर्थ को ध्वन्यात्मक विधा में निबंद्ध किया हुआ ।

प्रतिदान

प्रतिदान बाल काव्य नाटक है जिसे पांच अंको–वरण, पाणिग्रहण, सान्निध्य, प्रतिदान तथा वात्सल्य में निबद्ध किया गया है। काव्य नाटक भारतीय संस्कृति और सभ्यता का प्राचीनतम रूप हैं। प्रकृत काव्य नाटक अजय बुक डिपो, दिल्ली से सन 2020 में प्रकाशित हुआ है।

आधुनिक युग विज्ञान का युग है और प्रगतिशीलता के नाम पर मानव मूल्यों का हास होता जा रहा है। इसलिए वैदिक संस्कृति के पुनरुत्थान के लिए आज जीवन मूल्यों के पुनःस्थापन की आवश्यकता ही नहीं वरन अपरिहार्यता भी है। मानवीय अधिकारों से अनुप्राणित नारी सशक्तिकरण के इस दार में प्राचीन आदर्श नारियों का उल्लेख किया जाना अपेक्षित ही नहीं आवश्यक भी है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु डॉ० जयभगवान जी अपना बाल काव्य नाटक प्रतिदान लेकर अवतरित होते हैं।

कवि ने सत्यवान और सावित्री का भव्य अरण्य में प्रवेश नैसर्गिक छटाए कुंजित निकुजों में विहार को बहुत सुंदर शब्दों में उकेरा है–

"लो आप पहुंचे हम

भव्य अरण्य में

दिख रही

चहु ओर

अनुपम खुशहाली ।

देखो प्रिय !

दृश्य यह

कैसा मनोहर

करो विचरण यहा

जी–भर

नाच रहे मयूर

पिच्छ फैलाकर

हो रही अन्तर विभोर

मयूरी भी वराकी

पंख हिला–हिलाकर ।

कितने रमणीय!

कितने विचित्र!

ये वन उपवन।"

सावित्री स्वयं में मातृ शक्ति पुज शक्तिस्वरूपा है–

"चलो नाथ!

संग–संग मेरे

फल ले जाना

कल सवेरे।

अतः यह सावित्री का आलबल ही था जिससे वह अल्पायु को दीर्घायु में परिवर्तित कर सत्यवान को यम पाश से मुक्त कराकर वापिस लाने में सफल हुई। सावित्री का आत्मबल, त्याग, सेवा और भक्ति के ही वह यमराज से सत्यवान के प्राणों का लौटना ही अथवा प्राणों का पुनर्दान ही प्रतिदान है।

गवाक्ष

विवेच्य काव्य संग्रह 'गवाक्ष' डॉ० जयभगवान शर्मा की भावानुभूति एवं कला पक्ष के चरम क्षण की कविता है। प्रकृत काव्य संग्रह अनिल प्रकाशन, दिल्ली से सन् 2022 में प्रकाशित हुआ है। संग्रह का प्रारम्भ ईश वंदना के उद्घोष के साथ जीवन उपक्रम के मर्म से गुजर कर लिखा गया है।

कवि अस्तित्व बोध कविता में मानव के अमर्यादित है अमानवीयता के मिथ्या भ्रम को तोड़ मनुष्य के सर्वस्व होने के अहम को अपनी अन्वेषी दृष्टि देते हैं। कवि आगह करते हुए लिखता है–

"वे अंततः

धूल धूसरित हो।

बिखर कर खंड खंड

हो जाते हैं

अस्तित्व है।

हे कृतघ्न घन

मत कर अकड़कर अटन

अंहकार कर्दम में घस

हमारे सदृष्ट मत बन।"

शब्द तथा अंतः संबंध को स्वर शक्ति कहते है इसको व्यापार भी कहा जाता है और इस व्यापार के बाजार में डॉ० जयभगवान शर्मा शब्दों के उन्नायक साधक कवि लिखते है–

"शब्द शक्ति है

त्रिधा

बहती जिसमें

त्रिवेदो की त्रिवेदी

झंकृत होती

त्रिसंध्या में

त्रिपदी वाणी।"

यह संग्रह शब्द शिल्प और लोग का अनुपम विग्रह है। जिसका सौंदर्य निःशब्द है, जो अवसाद से दूर सृजन के वृहद लोक में ले जाता है। निःसन्देह प्रस्तुत काव्य संग्रह जीवन, साहित्य, संस्कृति और लोक के विराट सत्य के अन्वेषण का उपक्रम है।

संदर्भ सूची

1. डॉ0 जयभगवान शर्मा, स्पंदन, अन्तः स्पंदन
2. डॉ0 हरिश्चंद्र वर्मा, स्पंदन भूमिका
3. डॉ0 जयभगवान शर्मा, क्षितिज के पार, आत्म–स्पंदन
4. डॉ० रामनिवास मानव क्षितिज के पार, आमुख
5. डॉ0 जयभगवान शर्मा, क्षितिज के पार, पृ0 15
6. डॉ0 जयभगवान शर्मा, वक्त के पंख, पृ0 15
7. डॉ0 जयभगवान शर्मा, वक्त के पंख, पृ0 26
8. डॉ0 जयभगवान शर्मा, स्लोगन वल्लरी, पृ0 16
9. डॉ0 जयभगवान शर्मा, स्लोगन वल्लरी पृ0 89
10. डॉ0 जयभगवान शर्मा, स्लोगन वल्लरी, पृ0 16
11. डॉ0 जयभगवान शर्मा, पथ के राही, पृ0 14
12. डॉ0 जयभगवान शर्मा, झरता पानी, पृ0 44
13. डॉ0 जयभगवान शर्मा, झरता पानी, पृ0 24
14. डॉ0 जयभगवान शर्मा, प्रतिदान, पृ0 55–56
15. डॉ0 जयभगवान शर्मा, गवाक्ष, पृ0 65

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation